दर्शनशास्त्र का इतिहास
51 इमैनुअल कांट का परिचय
व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

खैर, आज हम इमैनुअल कांट के साथ दो हफ़्ते के ट्रेक पर शुरू कर रहे हैं, और मैं चाहता हूँ कि आज की बातचीत सिर्फ़ इंट्रोडक्टरी हो, और फिर अगली बार हम क्रिटिक ऑफ़ प्योर रीज़न के मटीरियल पर बात करेंगे, जिसमें शायद हम चार दिन लगेंगे। फिर एक दिन एथिक्स के बारे में प्रैक्टिकल रीज़न के क्रिटिक पर , और एक दिन उनके धार्मिक विचारों पर, कुछ इसी तरह की बात होगी। तो, उनका इंट्रोडक्शन देने के लिए, मुझे लगता है कि उनके प्रोजेक्ट, उनके फिलोसोफिकल प्रोजेक्ट को उनके पहले के लोगों के प्रोजेक्ट के साथ देखना शायद किसी भी चीज़ से ज़्यादा मददगार होगा।

द क्रिटिक ऑफ़ प्योर रीज़न, जो उनका सबसे मशहूर, सबसे लंबा और सबसे मुश्किल काम है, 1781 में आया, और डेविड ह्यूम की तरह, उन्हें लगा कि उन्हें इसके अलावा, उसी तरह की चीज़ का एक ज़्यादा पॉपुलर नज़रिया भी देना चाहिए, और इसलिए, लगभग 10, 15 साल बाद, उन्होंने प्रोलेगोमेना टू एनी फ्यूचर मेटाफ़िज़िक्स निकाली। अब, इस टाइटल को समझिए। सबसे पहले , प्रोलेगोमेना।

अब, अगर आपने हाथियों के बारे में कहानी सुनी है, तो आप कुछ अंदाज़ा लगा सकते हैं। कहानी अलग-अलग बैकग्राउंड के लोगों के बारे में है जिन्होंने हाथियों पर किताबें लिखीं। अंग्रेज़ ने हाथी के बारे में एक वॉल्यूम की हार्डबैक इंट्रोडक्शन लिखी, जो बहुत ही शानदार थी।

अमेरिकन, एन एलीफेंट डाइजेस्ट, फ्रेंचमैन, हाथी की लव लाइफ पर एक तस्वीरों वाली किताब, और जर्मन, हाथी की स्टडी के लिए तीन वॉल्यूम वाली प्रोलेगोमेना। खैर, यह उनका किसी भी फ्यूचर मेटाफिजिक्स के लिए प्रोलेगोमेना है। अब, मेटाफिजिक्स का मतलब और भी ज़रूरी समझें ।

क्योंकि, असल में, डेविड ह्यूम किसी भी मेटाफिजिकल ज्ञान, असलियत के नेचर के किसी भी ज्ञान पर शक करने लगे थे। हम बस दिखावे, घटनाओं को जानते हैं, और उससे आगे, यह ज़्यादा से ज़्यादा विश्वास की बात है। इसलिए, ह्यूम के मेटाफिजिकल शक को देखते हुए ही कांट ने अपने प्रोजेक्ट को 'प्रोलेगोमेना टू एनी फ्यूचर मेटाफिजिक्स' बताया है।

यानी, कांट की नज़र में, मेटाफ़िज़िक्स के क्या चांस हैं? हाँ, सर। अब, उन्होंने प्रोलेगोमेना टू एनी फ़्यूचर मेटाफ़िज़िक्स के इंट्रोडक्शन में उस ओरिएंटेशन के बारे में साफ़-साफ़ बताया है। तो, मैं इसमें से कुछ पढ़ूँगा।

लॉक और लाइबनिज़ के निबंधों के बाद से, आपको इंसानी समझ पर लॉक का निबंध और लाइबनिज़ के इंसानी समझ पर नए निबंध याद होंगे। उनके निबंधों के बाद से, या यूँ कहें कि मेटाफ़िज़िक्स की शुरुआत से लेकर जहाँ तक हम इसके इतिहास को जानते हैं, इसे और पीछे ले

जाएँ, तो डेविड ह्यूम के हमले से ज़्यादा कुछ भी ऐसा नहीं हुआ जो इसकी किस्मत तय कर सके। उन्होंने इस तरह के ज्ञान पर कोई रोशनी नहीं डाली, लेकिन उन्होंने एक चिंगारी ज़रूर जलाई जिससे रोशनी जल सकती थी अगर उसमें कोई ज्वलनशील चीज़ आ जाती और उसकी सुलगती आग को ध्यान से संभाला और बढ़ाया जाता।

ह्यूम ने मेटाफ़िज़िक्स में एक अकेले लेकिन ज़रूरी कॉन्सेप्ट से शुरुआत की, यानी, कारण और प्रभाव के बीच का कनेक्शन, जिसमें फ़ोर्स जैसे इसके डेरिवेटिव भी शामिल हैं। उन्होंने तर्क को चुनौती दी, जो खुद कारण और प्रभाव के कॉन्सेप्ट को जन्म देने का दावा करता है, कि वह उन्हें जवाब दे कि वह किस अधिकार से सोचती है कि कोई भी चीज़ बनाई जा सकती है कि अगर वह चीज़ मानी जाती है, तो कारण और प्रभाव की रोशनी में कोई और चीज़ उसे ज़रूर बताएगी। अब ह्यूम ने जो किया, उसका यह बुरा निचोड़ नहीं है।

पर आगे कहते हैं , ह्यूम का अंदाज़ा कितना भी जल्दबाज़ी में और गलत क्यों न लगे, कम से कम वह जांच पर आधारित था। लेकिन ह्यूम को मेटाफ़िज़िशियन की तरह ही बुरी हालत झेलनी पड़ी। और अगर आप मेटाफ़िज़िक्स में जाने की सोच रहे हैं, तो इस बात पर ध्यान दें कि आपको समझा नहीं गया।

यह देखकर बहुत दुख होता है कि उनके विरोधी, थॉमस रीड, ओसवाल्ड, BD, और दो दूसरे स्कॉटिश रियलिस्ट, इस बात को पूरी तरह से कैसे भूल गए। क्योंकि जब वे हमेशा उस बात को मान रहे थे जिस पर ह्यूम को शक था और जोश के साथ, अक्सर बेशर्मी से, उस बात को दिखा रहे थे जिस पर ह्यूम ने कभी शक करने के बारे में सोचा भी नहीं था, तो उन्होंने उनके कीमती सुझाव का इतना गलत मतलब निकाला कि सब कुछ अपनी पुरानी हालत में ही रहा जैसे कुछ हुआ ही न हो। सवाल यह नहीं था कि कारण का कॉन्सेप्ट सही, काम का, या ज़रूरी था या नहीं।

बेशक, ह्यूम को ऐसा लगता था। लेकिन क्या उस कॉन्सेप्ट को अनुभव से अलग, पहले से सोचे गए तर्क से सोचा जा सकता था? क्या उसमें अनुभव से अलग कोई अंदरूनी सच्चाई थी?

ह्यूम की प्रॉब्लम यही थी। यह सिर्फ कॉन्सेप्ट की शुरुआत से जुड़ा सवाल था, ज़रूरत से नहीं। खैर, वह आगे बताते हैं कि स्कॉटिश रियलिस्ट्स की कॉमन सेंस की अपील असल में काफी नहीं है।

उनका कहना है कि सादा कॉमन सेंस होना वाकई भगवान का एक बड़ा तोहफ़ा है। लेकिन इस कॉमन सेंस को सोच-समझकर, समझदारी से काम लेकर दिखाना चाहिए, न कि इसे एक भविष्यवाणी की तरह इस्तेमाल करना चाहिए, जब किसी की बात को सही ठहराने के लिए कोई और सही वजह न हो। और इसलिए वह इसी बात को ध्यान में रखकर अपने प्रोजेक्ट पर आते हैं।

इसलिए मैंने सबसे पहले पूछा कि क्या ह्यूम के ऑब्जेक्शन को एक आम रूप में नहीं रखा जा सकता और जल्द ही पाया कि कारण और प्रभाव का कॉन्सेप्ट किसी भी तरह से अकेला कॉन्सेप्ट नहीं था जिससे समझ चीज़ों के बारे में पहले से सोचती है, बल्कि मेटाफ़िज़िक्स में पूरी तरह से पहले से सोचे गए कॉन्सेप्ट होते हैं । मैंने उनकी संख्या पता करने की कोशिश की। और आप पाएंगे कि वह बारह के लिए सोचता है।

लेकिन जब मैं एक ही प्रिंसिपल से शुरू करके इसमें ठीक-ठाक कामयाब हो गया, तो मैंने इन कॉन्सेप्ट्स को निकालना शुरू किया, जिनके बारे में मुझे अब पक्का यकीन था कि वे एक्सपीरियंस से नहीं निकले थे। मैंने उन्हें वैसे ही निकालना शुरू किया जैसे ह्यूम ने निकालने की कोशिश की थी, लेकिन पाया कि वे प्योर अंडरस्टैंडिंग से निकले थे। तो, असल में, वह ह्यूम को यह कहकर जवाब देने की कोशिश करने वाला है कि कॉज़ एंड इफ़ेक्ट का कॉन्सेप्ट, जिस पर स्केप्टिसिज़्म डेवलप हुआ, दूसरे बेसिक मेटाफिजिकल कॉन्सेप्ट्स के साथ, आखिरकार, एंपिरिकली नहीं निकले हैं, बल्कि कुछ हद तक ए प्रायोरी हैं।

और बाद में , वह इसी तरह आगे बढ़ता है। मेटाफ़िज़िक्स ठीक से सिंथेटिक ए प्रायोरी प्रपोज़िशन से जुड़ा है। ए प्रायोरी प्रपोज़िशन ।

और वह अपनी प्रस्तावना को इस शानदार अंदाज़ के साथ खत्म करते हैं। कांट भी शानदार अंदाज़ में बात कर सकते हैं। इसलिए सभी मेटाफिजिशियन को उनके काम से पूरी तरह और कानूनी तौर पर तब तक सस्पेंड कर दिया जाता है जब तक वे इस सवाल का ठीक से जवाब नहीं दे देते कि सिंथेटिक ए प्रायोरी प्रपोज़िशन कैसे मुमकिन हैं? ठीक है? जवाब में ही वे सबूत हैं जो उन्हें तब दिखाने होंगे जब उनके पास प्योर रीज़न के नाम पर कुछ देने को हो।

लेकिन अगर उनके पास ये क्रेडेंशियल्स नहीं हैं, तो वे समझदार लोगों से , जिन्हें इतनी बार धोखा मिला है, बिना किसी और पूछताछ के उनके काम से निकाले जाने के अलावा और कुछ उम्मीद नहीं कर सकते। इसलिए, वह उन सभी मेटाफिजिशियन को नौकरी से निकालने के लिए तैयार हैं जो यह नहीं बता सकते कि उन्हें क्यों नहीं रहना चाहिए। खैर, तो उनका प्रोजेक्ट बहुत ज़रूरी है ।

वह मानते हैं कि ह्यूम के शक को देखते हुए, मेटाफ़िज़िक्स करने की संभावना पर ही गंभीर सवाल है। इसलिए अगर भविष्य में कोई मेटाफ़िज़िक्स होने वाला है, कोई भविष्य का मेटाफ़िज़िक्स, तो प्रोलेगोमेनन के तौर पर यह साबित करना ज़रूरी है कि ऐसे मेटाफ़िज़िकल कॉन्सेप्ट पहले से मौजूद हैं। ठीक है? अब, वह यही करने की कोशिश कर रहे हैं।

और मुझे लगता है कि हम उनकी अपनी टर्मिनोलॉजी को देखकर इस पर पहुँच सकते हैं। और यह वह टर्मिनोलॉजी है जिसे उन्होंने क्रिटिक ऑफ़ प्योर रीज़न के इंट्रोडक्शन में डेवलप किया है। और वह मटीरियल जो आपको 367 से लगभग 377 तक की एंथोलॉजी में मिलता है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि इंट्रोडक्शन सिर्फ़ टर्मिनोलॉजी है, लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने जो टर्मिनोलॉजी इंट्रोड्यूस की है, वह बहुत बड़ी पिक्चर में एंट्री देती है।

तो, चलिए इस पर नज़र डालते हैं। उन्होंने शुरू में ही तीन फिलॉसफी में फ़र्क बताया है। डॉगमैटिक, स्केप्टिकल और क्रिटिकल फिलॉसफी।

अब, शक करके आपको यह पहचानने में कोई मुश्किल नहीं होगी कि उसके मन में कौन है या क्या है। डेविड ह्यूम। हाँ।

लेकिन, डोगमैटिक फ़िलॉसफ़ी, पहले के मेटाफ़िज़िशियन की फ़िलॉसफ़ी है। जिन्होंने बिना आधार की जांच किए डोगमैटिक मेटाफ़िज़िकल बातें कही हैं। तो, उनके मन में निश्चित रूप से वह कॉन्टिनेंटल रैशनलिस्ट परंपरा है।

आपको हमारा डायग्राम याद होगा जिसमें डेसकार्टेस, स्पिनोज़ा और लाइबनिज़ का कॉन्टिनेंटल रैशनलिज़्म है। उनमें से हर कोई डेसकार्टेस के मेथड का इस्तेमाल करके अपना मेटाफिजिकल सिस्टम बना रहा है। यह कहने की कोशिश कर रहे हैं कि कुछ एक्सियोमैटिक फर्स्ट प्रिंसिपल्स हैं जिनसे बाकी सब कुछ निकाला जा सकता है।

अब, यह तो कट्टर मेटाफ़िज़िक्स है। दूसरी ओर, हमारे पास पहले के स्टेज में लॉक जैसे लोग हैं जो यह भी सोचते हैं कि मेटाफ़िज़िकल ज्ञान मुमकिन है, हालांकि एंपिरिकल बेसिस पर। और बर्कले, बेशक।

और उनके मेटाफिजिकल नतीजे भी डॉगमैटिक माने जाएंगे। तो, ये डेविड ह्यूम, स्केप्टिक, और डॉगमैटिक फिलॉसफर हैं। हमें कहना चाहिए कि जब लाइबनिज 1700 के दशक में थे, तो कांट से पहले 18वीं सदी में बहुत सारी दूसरी मेटाफिजिकल फिलॉसफी चल रही थीं।

तो 18वीं सदी के जर्मन रैशनलिज़्म में लाइबनिज़ के बाद आने वाले लोग थे। और इन्हीं लोगों के अंडर में इमैनुअल कांट ने पढ़ाई की थी। तो वह उस रैशनलिस्टिक परंपरा में पले-बढ़े जो डेसकार्टेस के मेथडोलॉजिकल रेवोल्यूशन से आई थी, आप देखिए।

अब, वह हमें बताते हैं कि डेविड ह्यूम को पढ़कर वह उन कट्टर नींद से जागे थे। वे कट्टर नींद उस तरह के सिस्टम की बिना आलोचना वाली मेटाफिजिकल बातें हैं। और निश्चित रूप से ह्यूम को ऐसे लोगों को जगाना चाहिए।

तो, जब वह अपने प्रोजेक्ट पर काम करते हैं, तो उनका प्रोजेक्ट क्रिटिकल फिलॉसफी होता है। यानी, उन हालातों को देखने की कोशिश करना जो मेटाफिजिक्स को मुमकिन बनाते हैं। मेटाफिजिक्स के एपिस्टेमोलॉजिकल फाउंडेशन की आलोचना करना।

इस मायने में, एक क्रिटिक। तो उनका मुख्य काम, जिससे वे अब हमें मिलवा रहे हैं, उसे, आप ध्यान दें, क्रिटिक कहते हैं। क्रिटिकल फिलॉसफी।

प्योर रीज़न की एक आलोचना। प्योर , यानी, पहले से सोचा हुआ , बिना किसी एंपिरिकल इनपुट के। तो वह प्योर रीज़न में मौजूद संभावनाओं को क्रिटिकली देखने की कोशिश कर रहे हैं।

अनुभव से अलग तर्क करें। मेटाफ़िज़िक्स की संभावनाएँ। शुद्ध तर्क की आलोचना।

मेटाफिजिकल ज्ञान से जुड़ा हुआ। और मेटाफिजिकल ज्ञान के लिए पारंपरिक तरीका। तो, मान लीजिए, पारंपरिक मेटाफिजिकल ज्ञान से जुड़ा हुआ।

अब, आप पाएंगे कि 1781 में उस पहली आलोचना के अलावा, वह थोड़ी देर बाद एक दूसरी आलोचना लेकर आए। प्रैक्टिकल रीज़न की आलोचना । अब, तीसरा शब्द, प्रैक्टिकल रीज़न, अरस्तू के समय से ही नैतिक सोच को बताता रहा है।

तो यह मेटाफिजिकल ज्ञान की नहीं, बल्कि नैतिक ज्ञान की आलोचना है। अब, याद रखें कि उस मेटाफिजिकल परंपरा में, यह माना जाता था कि नैतिक ज्ञान पहले सच से उतना ही निकाला जा सकता है जितना कि मेटाफिजिकल ज्ञान । जॉन लॉक ने सोचा कि, कम से कम सिद्धांत रूप में, हमें नैतिक ज्ञान उसी तरह से मिल जाना चाहिए जैसे हम गणितीय ज्ञान पाते हैं।

डिडक्टिवली। इंट्यूटिव फर्स्ट प्रिंसिपल्स या किसी और चीज़ से। या इंसान के नेचर के बारे में हमारे ज्ञान से।

नैतिकता के मामले में। और डेविड ह्यूम, आपको याद होगा, अपनी इंक्वायरी के पहले चैप्टर में, एब्स्ट्रैक्ट और प्रैक्टिकल फिलॉसफी में फर्क करते हैं। जहां एब्स्ट्रैक्ट फिलॉसफी मेटाफिजिक्स के बारे में है, वहीं प्रैक्टिकल फिलॉसफी नैतिक फिलॉसफी है।

और मोरल फिलॉसफी शब्द असल में सिर्फ एथिक्स नहीं था , बल्कि पॉलिटिकल थ्योरी और इंसानी कामों पर लागू होने वाली कोई भी दूसरी चीज़ थी। तो, प्रैक्टिकल रीज़न की आलोचना, मोरल नॉलेज के एपिस्टेमोलॉजिकल स्टेटस की आलोचना है। और, बाद में, उन्होंने एक तीसरी आलोचना पेश की।

यह जजमेंट की आलोचना थी। और इसका संबंध एस्थेटिक जजमेंट से है। एस्थेटिक नॉलेज से।

के बारे में भी , जहाँ हम व्यवस्था के बारे में तरह-तरह के फैसले लेते हैं। आप देखिए, प्रकृति का व्यवस्थित होना ही वह बात थी जो 18वीं सदी का वैज्ञानिक दिमाग कह रहा था। वह इस पर बहुत अड़ा हुआ था।

व्यवस्थित होना । प्रकृति की सुंदरता। तो, प्रकृति के बारे में सौंदर्य का नज़रिया।

और आर्ट के कामों के बारे में । अब, डेविड ह्यूम और कुछ मोरल सेंस फिलॉसफर ने एस्थेटिक नॉलेज की तुलना मोरल नॉलेज से की थी । आप समझे? तो, मोरल नॉलेज से डील करने के बाद, वह अब इस दूसरे, एस्थेटिक नॉलेज पर आते हैं।

उठते हैं । और, हर मामले में, वह जो देख रहा है, जो देख रहा है, या देखने की कोशिश कर रहा है, वे वे प्रीकंडीशन हैं जो नॉलेज जजमेंट को मुमकिन बनाती हैं। नैतिक ज्ञान की संभावना के लिए प्रीकंडीशन।

एस्थेटिक नॉलेज का। और मेटाफिजिकल नॉलेज का। अब, आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि प्योर रीजन की आलोचना इस नतीजे पर पहुँचती है कि ट्रेडिशनल सेंस में मेटाफिजिकल नॉलेज की कोई संभावना नहीं है जिसमें ऑब्जेक्टिविटी और लॉजिकल निश्चितता शामिल हो।

मेटाफ़िज़िक्स के मामलों में कट्टर पक्का यकीन मुमकिन नहीं है। और यह बात मेटाफ़िज़िक्स के उन तीन एरिया पर लागू होती है जो उनके समय में हावी थे। उन्होंने जर्मन रैशनलिस्ट परंपरा में, मेटाफ़िज़िक्स को तीन हिस्सों में बांटा था।

क्रिश्चियन वुल्फ। उनमें से एक ने इसे फिलॉसॉफिकल साइकोलॉजी, फिलॉसॉफिकल कॉस्मोलॉजी में बांटा।

और फिलॉसॉफिकल थियोलॉजी। ज़ाहिर है, मन, नेचर और भगवान से जुड़ी हुई। बेशक, जब आप इन तीनों के बारे में बात कर चुके हैं, तो बात करने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं बचता।

प्रकृति, मन और ईश्वर। तो यह काफी गले लगाने वाला है । इसलिए नेचुरल थियोलॉजी, सिर्फ़ तर्क से थियोलॉजी के बारे में उनके नतीजे नेगेटिव हैं।

वह भगवान के होने के तर्कों की आलोचना इस आधार पर करते हैं कि इसके लिए ज़रूरी पहले से बनी शर्तों की कमी है। लेकिन यहाँ दिलचस्प बात यह है कि वह आगे यह सुझाव देते हैं, तर्क देते हैं कि मेटाफ़िज़िकल विश्वास, हाँ, मेटाफ़िज़िक्स के पारंपरिक तरीके में कुछ चीज़ों के आधार पर संभव है, लेकिन नैतिक और एस्थेटिक ज्ञान के आधार पर भी संभव है । तो इसी आधार पर, और इसी आधार पर, हम सही तरीके से मेटाफ़िज़िकल विश्वास बनाते हैं।

तो फिर, आपको ज्ञान और विश्वास के बीच का अंतर समझ में आता है। कांट मेटाफिजिकल ज्ञान और लॉजिकल निश्चितता की संभावना की आलोचना करते हैं। लेकिन अपनी तीनों आलोचनाओं में पाते हैं कि कुछ मेटाफिजिकल विश्वासों का एक आधार होता है, जिसमें ईश्वर में विश्वास भी शामिल है।

तो यह पूरी तस्वीर है। अब, हमें यह भी जोड़ना होगा कि इसे आसान बनाने की उनकी इच्छा की वजह से पहले दो के ज़्यादा पढ़ने लायक और छोटे वर्शन बने। तो पहले वाले का छोटा वर्शन ही वह चीज़ है जो मैंने अभी आपको पढ़कर सुनाई, जो भविष्य के किसी भी मेटाफ़िज़िक की शुरुआत है।

और प्रैक्टिकल रीज़न की आलोचना का छोटा वर्शन है मोरल्स की मेटाफिजिकल नींव। और आम तौर पर, एथिक्स में कांट की कैटेगरिकल इम्पेरेटिव के बारे में सिलेक्शन, जिसे हम लोगों को इंट्रोडक्टरी कोर्स में पढ़ाते हैं, मोरल्स की मेटाफिजिकल नींव से आता है। तो, यह तस्वीर है।

उन्होंने धर्म पर खास तौर पर 'रिलिजन विदिन द बाउंड्स ऑफ़ रीज़न अलोन' नाम से काम भी किया। जहाँ आप देख सकते हैं कि वह रेवेलेशन से अलग धार्मिक ज्ञान की संभावनाओं के बारे में पूछ रहे हैं। इस तरह हमें भगवान के बारे में किस तरह का ज्ञान मिलता है? ठीक है।

सबके बारे में कुछ न कुछ कहेंगे अगले कुछ हफ़्तों में इन कामों पर बात होगी। ठीक है, कोई सवाल है, कोई कमेंट है? यह सब इस बारे में है कि क्रिटिकल फिलॉसफी से उनका क्या मतलब है। आखिर, अगर क्रिटिकल फिलॉसफी उनका प्रोजेक्ट है, तो आपको उनके पूरे प्रोजेक्ट के बारे में बात करनी होगी , आप समझ रहे हैं।

मैंने किसे देखा? हाँ। आपने कहा कि उनकी मेटाफिजिकल मान्यताएँ नैतिक ज्ञान और एस्थेटिक ज्ञान पर आधारित हैं। मुख्य रूप से ये दो, या पहला वाला आता है? पहला वाला भी आता है, इसीलिए मैंने यह तीर नीचे की ओर खींचा है।

उनका नतीजा, और हमें एंथोलॉजी में इसका थोड़ा सा हिस्सा मिला है, पहली आलोचना के लिए उनका नतीजा असल में यह है कि नहीं, हमें सिर्फ़ दिखावे, घटनाओं का ज्ञान है। लेकिन दूसरी ओर, प्रैक्टिकल कारणों से, हम विश्वास करने के लिए मजबूर हैं, आप देखिए। यह विश्वास की साइकोलॉजी से थोड़ा ज़्यादा है।

लेकिन फिर से, वह ह्यूम और स्कॉटिश रियलिस्ट्स की बातों की अपील कर रहे हैं, जिन्हें वे इंसानी मन की प्रवृतियां कहते हैं। आप देखिए, इंसानी मन की प्रवृतियां। तो ये तीनों ही मेटाफिजिकल विश्वासों में योगदान देती हैं।

दिक्कत यह है कि जैसे ह्यूम के साथ हुआ, लोग कभी-कभी सिर्फ़ पहले चार सेक्शन पढ़ते हैं, ह्यूम को शक करने वाला पाते हैं, और फिर बाद में जो आता है उसे भूल जाते हैं, वैसे ही कांट के साथ भी, वे उसके नेगेटिव नतीजे पढ़ते हैं और बाद में जो आता है उसे नज़रअंदाज़ कर देते हैं। आप समझे। लेकिन ह्यूम का नतीजा, जैसे ह्यूम का नतीजा यकीन के बारे में है, वैसे ही कांट का नतीजा भी यकीन के बारे में है।

असल में, पहली आलोचना की प्रस्तावना में एक जगह है जहाँ वे कहते हैं कि विश्वास के लिए जगह बनाने के लिए हमें ज्ञान को खत्म करना होगा। विश्वास के लिए जगह बनाने के लिए ज्ञान को खत्म करना होगा। आप देखिए, अगर आप प्लेटो की बंटी हुई लाइन पर वापस जाना चाहते हैं, तो वे दोनों के बीच वह मुश्किल फ़र्क कर रहे हैं।

देखिए, आजकल हम ज्ञान को सिर्फ़ विश्वासों का एक हिस्सा समझते हैं। ऐसे विश्वास जो कुछ शर्तों को पूरा करते हैं। लेकिन प्लेटो से लेकर कांट तक, नहीं, ये दो बहुत अलग चीज़ें हैं।

ज्ञान में या तो किसी तरह की सीधी जानकारी शामिल होती है, जो डायलेक्टिक या इंट्यूशन के नतीजे में होती है, जो एक्सियोमैटिक, सेल्फ-एविडेंट है, या फिर ऐसे पहले प्रिंसिपल्स से डेमोंस्ट्रेटिव ज्ञान होता है। आप देखिए, यही ज्ञान का आइडिया है। विश्वास में इसकी कमी होती है।

क्या आपने कहा कि यह साफ़ फ़र्क कुछ ऐसा है जो आगे चलकर ज़िंदगी को ऊपर उठाता है और दोहराता है? नहीं, ऐसा नहीं है कि इतिहास ने कहा कि ज्ञान और विश्वास के बीच प्लेटोनिक बँटवारा खत्म हो गया है , और हम इसे फिर कभी नहीं देखेंगे। नहीं, काश यह इतना आसान होता। मान लीजिए कि ह्यूम के बाद से, दोनों के बीच की लाइन कमज़ोर होती गई है।

तो आप यह नहीं मान सकते कि लोग इन शब्दों का इस्तेमाल प्लेटोनिक परंपरा के बिल्कुल अलग मतलब में कर रहे हैं। नहीं। 1960 के दशक में एपिस्टेमोलॉजी में एक डेवलपमेंट हुआ था, 1960 के दशक में, जहाँ हम ज्ञान को सही विश्वास के तौर पर डिफाइन कर रहे थे।

तो ज्ञान, विश्वास का ही एक हिस्सा है। और 60s से लेकर 70s और 80s तक, लोग इस बात पर काम कर रहे हैं कि सही होने की शर्तें क्या हैं। और किन शर्तों के तहत आप कह सकते हैं कि आप किसी चीज़ को सच मानने के लिए सही हैं? लेकिन ऐसा ज्ञान की भावना के कमज़ोर होने की वजह से है।

ठीक है, देखते हैं, अगला क्या है? पहले से और बाद में। बाद में। हाँ, और वहाँ आप इसे अपनी रीडिंग में उस आम इलाके में 369 से 373 के आसपास देख सकते हैं।

हम पहले से ही 'अ प्रायोरी' और 'अ पोस्टीरियोरी' शब्दों से परिचित हैं, क्योंकि इनका इस्तेमाल बहुत ज़्यादा किया गया है, कांट से पहले के लोगों ने नहीं, बल्कि उनके बारे में बात करने वाले लोगों ने। ह्यूम में, अंतर विचारों के संबंधों और तथ्यों के बीच था। और बाद की अनुभववादी परंपरा में, ह्यूम का अंतर काफी पक्का बना हुआ है ।

विचारों के संबंध बस एनालिटिकल होते हैं। वे बस लॉजिकल सच के रूप में होते हैं, जैसे A बराबर A, A नॉन-A नहीं है। बैचलर वह पुरुष होता है जो बिना शादी का होता है।

बिल्ली तो बिल्ली ही होती है। आपको लॉजिकल पहचान कहाँ से मिली? ठीक है, लॉजिकल सच। विचारों का रिश्ता।

अगर आपको आइडिया पता हैं, तो आप ऐसे रिश्ते बना सकते हैं। इसलिए उन्होंने मैथ को आइडिया के रिश्तों से जुड़ा हुआ माना । क्योंकि, एक्सिओम्स, आप थ्योरम साबित करने में एक्सिओम्स, कोरोलरी के बीच रिश्ते बनाते हैं।

और यह सारा ज्ञान आपस में जुड़े हुए बेसिक कॉन्सेप्ट से मिलता है। अब, असल बातों को ज़्यादा सिंथेटिक तरीके से बताया जाता है। यानी, वे गलत भी हो सकते हैं।

वे ज़रूरी नहीं कि सच हों। वे कंटिंजेंट सच हैं। वे झूठे भी हो सकते हैं।

और वे गलत भी हो सकते हैं क्योंकि प्रेडिकेट कुछ ऐसा जोड़ता है जो पहले से सब्जेक्ट से लॉजिकली जुड़ा नहीं है। खैर, बैचलर्स दुखी होते हैं, आप देखिए। यह सच हो सकता है, लेकिन दोनों के बीच कोई लॉजिकल कनेक्शन नहीं है।

तो आपके पास सिंथेटिक सच हैं, जिन्हें कभी-कभी फैक्टुअल सच कहा जाता है, कभी-कभी मटेरियल सच। यानी, उनके पास सब्जेक्ट मैटर है। तो आपके पास ये दोनों हैं।

और बाद वाले में, आपके पास सभी साइंस होंगे। फिजिकल साइंस, लाइफ साइंस और साइकोलॉजिकल साइंस को तब मेंटल साइंस कहा जाएगा। तो सभी साइंस वहां फिट हो जाएंगे।

और, बेशक, मेटाफ़िज़िक्स, जिसे साइंस माना जाता था। ह्यूम ने ही हमें बताया था, नहीं, यह साइंस नहीं है। यह कोई साइंस नहीं है।

क्योंकि इससे ज्ञान नहीं मिलता। लेकिन ह्यूम से पहले, हाँ, इसे इसी तरह माना जाता था। अब, आप इससे देख सकते हैं कि परिभाषाएँ सामने आने लगती हैं।

एनालिटिक, हाँ, प्रेडिकेट लॉजिकली सब्जेक्ट में होता है। और प्रपोज़िशन बस उसे खोलता है। ज़रूरी तौर पर सच।

क्या आप यह समझते हैं? Predicate, जो subject के बारे में predicated है, logically subject का हिस्सा है। तीन और पांच आठ होते हैं। Bachelors अविवाहित पुरुष होते हैं।

सिंथेटिक प्रपोज़िशन में, प्रेडिकेट सब्जेक्ट में नहीं होता, बल्कि सब्जेक्ट में जुड़ जाता है। अब, कांट जो खास काम करते हैं, वह यह है कि वे उस अंतर पर a priori और a posteriori के बीच और अंतर लाते हैं। अब, a posteriori शब्द को समझना आसान है, जिसका मतलब है बस अनुभव पर निर्भर।

अनुभव पर निर्भर। अनुभव के बाद। और इसलिए, कांट ने तुरंत कहा कि कुछ निश्चित सिंथेटिक ए पोस्टीरियरी स्टेटमेंट, प्रपोज़िशन होते हैं।

हाँ। कुछ बातें ऐसी होती हैं जो हम कहते हैं, जो सिर्फ़ अनुभव पर आधारित लगती हैं। सिंथेटिक ए पोस्टीरियरी।

और इसी तरह, जब उन्होंने कहा कि हमारे पास एनालिटिक ए प्रायोरी प्रपोज़िशन हैं, तो वे कुछ नया नहीं कह रहे थे। ए प्रायोरी का मतलब है, आसान शब्दों में, अनुभव से अलग। और ज़ाहिर है, विचारों के एनालिटिक संबंध अनुभव से अलग होते हैं।

अगर आप सच में दो और एक का कॉन्सेप्ट समझते हैं, तो आपको अपनी उंगलियां गिनने की ज़रूरत नहीं है, ताकि आप समझ सकें कि दो और एक तीन होते हैं। लॉजिकली ज़रूरी है। तो, इन दोनों मामलों में कोई प्रॉब्लम नहीं है।

समस्या तब आती है जब वह इसमें सिंथेटिक की बात जोड़ देता है। पहले से ही, जो सेब और नाशपाती, आड़ू और केले को मिलाना जैसा लगता है।

सिंथेटिक ए प्रायोरी। अब, यह और साफ़ तौर पर देखने के लिए कि वह इसमें क्या कर रहे हैं, आइए थोड़ा और ठीक से समझते हैं कि ए प्रायोरी से उनका क्या मतलब है। मुझे लगता है कि हमारे ज़्यादातर शुरुआती कोर्स में, हम इस बात से ही संतुष्ट हो जाते हैं कि ए प्रायोरी का मतलब अनुभव से अलग होता है।

लेकिन कांट इससे संतुष्ट नहीं थे। कांट कहना चाहते थे कि पहले से मौजूद ज्ञान यूनिवर्सल और ज़रूरी होगा। यूनिवर्सल और ज़रूरी।

तो पहले से तय सच यूनिवर्सली सच होंगे। सिर्फ़ किसी खास सिचुएशन के हिसाब से नहीं । यूनिवर्सली सच।

और ज़रूरी है कि वे सच हों। वे झूठे नहीं हो सकते। हाँ।

क्योंकि सिर्फ़ एनालिटिक ही ज़रूरी नहीं कि सच हो, बल्कि ए प्रायोरी भी ज़रूरी है। तो आपके पास दो तरह की ए प्रायोरी नॉलेज है। सिर्फ़ एक नहीं।

आपके पास एनालिटिक ए प्रायोरी है, जैसे टॉटोलॉजीज़। और आपके पास सिंथेटिक ए प्रायोरी है, जैसे फ़िज़िक्स। शायद मेटाफ़िज़िक्स।

ज़रूर, मैथेमेटिक्स, जिसे वह वहाँ नीचे ले जाता है। हाँ। क्योंकि कांट के लिए सिंथेटिक ए प्रायोरी में मैथ, फ़िज़िक्स, नेचुरल साइंस, यानी मेटाफ़िज़िक्स शामिल हैं।

सिर्फ़ घटनाओं के बारे में बात करने के अलावा कुछ और करना। मैथ, फ़िज़िक्स , मेटाफ़िज़िक्स । हाँ।

और आप पाएंगे कि क्रिटिक ऑफ़ प्योर रीज़न में, तीन बड़े सेक्शन हैं जिनमें वह इन पर आते हैं। पहला सेक्शन है, जिसे वह ट्रांसेंडेंटल एस्थेटिक कहते हैं। जहाँ वह मैथमेटिकल नॉलेज का आधार समझाते हैं।

हैं? सुंदर? ठीक है, फ़ोन रोको। लेकिन अपनी सांस मत रोको। हाँ।

जर्मन में एस्थेटिक का मतलब सेंस परसेप्शन से है। किसी भी तरह की कॉन्शियस अवेयरनेस से। ठीक है।

तो, ट्रांसेंडेंटल एस्थेटिक। फिर उसके बाद ट्रांसेंडेंटल एनालिटिक आता है। यह उसे फिजिक्स के ज्ञान और फिजिक्स के सिद्धांतों से परिचित कराता है।

और फिर ट्रांसेंडेंटल डायलेक्टिक। जहाँ वह , हाँ, मेटाफ़िज़िक्स को देखता है । और यह ट्रांसेंडेंटल डायलेक्टिक है जिसमें ये तीन हिस्से हैं।

रैशनल या फिलॉसॉफिकल साइकोलॉजी से निपटना। रैशनल या फिलॉसॉफिकल कॉस्मोलॉजी। रैशनल या फिलॉसॉफिकल थियोलॉजी।

आप इसे हमारे एडिटर द्वारा दी गई टेबल ऑफ़ कंटेंट्स में देख सकते हैं। पेज 366 पर यह बहुत मददगार है। क्या आपने ध्यान दिया? उस पर एक नज़र डालें ।

366 पर, उनके पास पहला भाग, ट्रांसेंडेंटल एस्थेटिक है। दूसरा भाग, ट्रांसेंडेंटल लॉजिक। डिवीजन एक, ट्रांसेंडेंटल एनालिटिक।

डिवीजन दो, ट्रांसेंडेंटल डायलेक्टिक। खैर, उनका पॉइंट यह है कि हमारे पास रैशनल नॉलेज है। यूनिवर्सल और ज़रूरी।

या सवाल यह है कि क्या हमारे पास सच में यूनिवर्सल और ज़रूरी ज्ञान है, पहले से पता है। यह सिंथेटिक है।

कहने का मतलब है, इससे इन शब्दों का मतलब और बढ़ जाता है। क्या असलियत का ज्ञान, असलियत की बातों का ज्ञान, पहले से पता होना मुमकिन है? यही बात है। खैर, क्या यह पूछना उनका प्रोजेक्ट नहीं था? क्या मेटाफ़िज़िक्स पहले से पता होना मुमकिन है? मेटाफ़िज़िक्स में सिंथेटिक ज्ञान, यानी असलियत के बारे में तथ्यों का ज्ञान शामिल होगा ।

तो यह उस तरह का कॉन्सेप्चुअल अपैरेटस है जिसे वह इस बात को ध्यान में रखकर डेवलप कर रहा है। अब, इसे थोड़ा और समझने के लिए, पेज 369 देखें । 369.

दूसरे कॉलम का टॉप। आप में से जो लोग यह एंथोलॉजी नहीं लाए हैं, उन्हें कांट में इसकी ज़रूरत पड़ेगी। और उसके बाद हमेशा।

369, सबसे ऊपर दूसरा कॉलम। मेरा सवाल यह है कि जब अनुभव की सारी सामग्री और मदद छीन ली जाती है, तो हम तर्क से क्या हासिल करने की उम्मीद कर सकते हैं? अनुभव से अलग , हम क्या हासिल कर सकते हैं? पहले से पता ज्ञान। फिर, उस कॉलम के आधे हिस्से में, वह कहते हैं कि इस काम को करने वाले लेखक से दो ज़रूरी मांगें की जाती हैं।

सबसे पहले, निश्चितता के बारे में । और उस पैराग्राफ के बीच में, वह कहते हैं, हर तरह का ज्ञान जो निश्चित होने का दावा करता है, पहले से ही, यह बताता है कि इसका मतलब है कि इसे बिल्कुल ज़रूरी माना जाना चाहिए । बिल्कुल ज़रूरी।

शुद्ध ज्ञान, पहले से पता, जो सभी अपोडिक्टिक फिलोसोफिकल निश्चितता का माप है। अपोडिक्टिक? हाँ, साबित, साबित करने लायक। लॉजिकली ज़रूरी।

और 371 पर, दूसरे कॉलम के बिल्कुल नीचे, आम सच जो अंदर की ज़रूरत की तरह होते हैं, उन्हें अनुभव से अलग, साफ़ और अपने आप में पक्का होना चाहिए। इसलिए उन्हें ज्ञान पहले से पता होना कहा जाता है। लेकिन ध्यान दें कि वह उन्हें आम सच कहते हैं।

आप देखिए, उनका लॉजिकली यूनिवर्सल रूप है। सभी। सिर्फ़ कुछ नहीं, सिर्फ़ लोकल नहीं, बल्कि सभी।

इतना यूनिवर्सल और ज़रूरी, कि 'अ प्रायोरी' में एक क्राइटेरिया शामिल है । और 372 के शुरू में, उस पहले पैराग्राफ के आधे रास्ते में, ठीक है, उस पहले पैराग्राफ की छह लाइन में, अगर हम अनुभव से उन सभी चीज़ों को हटा भी दें जो इंद्रियों से जुड़ी हैं, तो भी उनसे निकले कुछ ओरिजिनल कॉन्सेप्ट और फैसले रह जाते हैं, जिनकी शुरुआत पूरी तरह से 'अ प्रायोरी' रही होगी, सभी अनुभवों से अलग। तो यह साफ़ है कि वह क्या चाहता है।

और 373 के टॉप पर, पहले कॉलम में, वह मैथ से एक उदाहरण देता है, और मैं आपको उसके साथ खेलने के लिए छोड़ दूँगा। सिंथेटिक ए प्रायोरी फ्रेज़ 374 पर इंट्रोड्यूस किया गया है। सिंथेटिक ए प्रायोरी, 374, दूसरा कॉलम, टॉप।

सिंथेटिक जजमेंट में, पहले से पता, एंपिरिकल मदद की ज़रूरत होती है । अगर मैं कॉन्सेप्ट A से आगे जाकर दूसरा कॉन्सेप्ट B ढूंढना चाहता हूं, तो ऐसी कौन सी चीज़ है जिस पर मैं टिक सकूं और जिससे A और B का सिंथेसिस मुमकिन हो सके? यह देखते हुए कि मुझे एक्सपीरियंस के फील्ड में देखने का फ़ायदा नहीं मिल सकता। प्रपोज़िशन लें, और यह ह्यूम का ज़रूरी प्रपोज़िशन है, यह प्रपोज़िशन कि जो कुछ भी होता है उसका एक कारण होता है।

इसे लीजिए। किसी चीज़ के होने के कॉन्सेप्ट में, मैं बेशक समय से पहले मौजूद किसी चीज़ के बारे में सोचता हूँ, और इससे कुछ एनालिटिकल फैसले निकाले जा सकते हैं, लेकिन कारण का कॉन्सेप्ट उससे बाहर है। मुझे बेशक पहले से मौजूद किसी चीज़ का आइडिया है।

ज़रूर, कंजंक्शन। रेगुलैरिटी। कॉन्स्टेंट कंजंक्शन।

हाँ, वह ह्यूम से सहमत हैं, हमारे पास वह है। ठीक है। लेकिन हमारे पास कारण का कोई कॉन्सेप्ट नहीं है।

और यह असल में जो होता है उससे कुछ अलग दिखाता है, और यह जो होता है उसके रिप्रेजेंटेशन में शामिल नहीं है। तो, कॉज़-इफ़ेक्ट कनेक्शन कैसा है? ठीक है। कोई सवाल, कमेंट्स? ठीक है।

ट्रांसेंडेंटल तरीका। और आपने देखा होगा कि उस संदर्भ में, ट्रांसेंडेंटल शब्द का इस्तेमाल कई बार हुआ है। मैं ज्ञान को ट्रांसेंडेंटल कहता हूँ, वह 375 पर कहते हैं, जो चीज़ों से नहीं बल्कि पहले से मौजूद कॉन्सेप्ट से जुड़ा होता है।

और यह एक बहुत अच्छी परिभाषा है। ट्रांसेंडेंटल को ट्रांसेंडेंट के साथ कन्फ्यूज न करें। अब, अगर आप एक थियोलॉजिस्ट की तरह सोचते हैं, तो ट्रांसेंडेंटल शब्द तुरंत कहीं न कहीं मौजूद भगवान के बारे में सोचने पर मजबूर कर देता है।

एक भगवान जो इस दुनिया से परे है और ऐसे काम करता है जैसे वह इसके बाहर से हो। ट्रांसेंडेंट। ट्रांसेंडेंटल शब्द का मतलब ऐसा कुछ नहीं है।

अब, अगर आप किसी थियोलॉजिस्ट की तरह नहीं बल्कि अमेरिकन लिटरेचर के किसी व्यक्ति की तरह सोचते हैं, तो आप ट्रांसेंडेंटलिज़्म शब्द से परिचित होंगे। जहाँ ट्रांसेंडेंटल शब्द का मतलब बाहर की किसी चीज़ से नहीं है, बल्कि यहाँ अंदर और नीचे और यहाँ के आसपास की किसी चीज़ से है जो सब में फैली हुई है। आप देखिए, अमेरिकन ट्रांसेंडेंटलिज़्म का मानना था कि इंसान की आत्मा एक क्रिएटिव, एक्सप्रेसिव पावर है, लेकिन सिर्फ़ मुझ तक सीमित नहीं है।

यह हर चीज़ में क्रिएटिव स्पिरिट है जो मेरी क्रिएटिव स्पिरिट में और उसके ज़रिए काम करती है । एक तरह का पैनएंथिज़्म। और हर इंसान की आत्मा, मन, आत्मा इस दुनिया की आत्मा में हिस्सा लेती है।

यह आपको एमर्सन में मिलता है। ट्रांसेंडेंटलिज़्म। 19वीं सदी में ट्रांसेंडेंटलिज़्म जर्मन रोमैंटिसिज़्म का अमेरिकन वर्शन था, जिसमें पैन्थेइस्टिक या पैनएंथिस्टिक झुकाव था।

वैसे, कांट के बिना कोई ट्रांसेंडेंटलिज़्म या रोमैंटिसिज़्म नहीं होता। वह वह फ़िलॉसफ़िकल बदलाव है जिसने इसे मुमकिन बनाया। उनके पास यह शब्द उनसे पहले था।

उन्होंने बस इसे चुरा लिया। खैर, उधार ले लिया । इस पर सवार हो गए।

लेकिन देखिए, अगर आपके मन में ट्रांसेंडेंटलिज़्म का विचार है, तो आप उस विचार के बीज पर वापस जा सकते हैं जिसके बारे में कांट बात कर रहे हैं। वह इंसानी आत्मा के अंदरूनी संसाधनों के बारे में बात कर रहे हैं। इंसानी मन के अंदरूनी संसाधनों के बारे में।

ज्ञान की खोज में तर्क पहले से क्या लाता है? और ट्रांसेंडेंटल तरीका इन अंदरूनी रिसोर्स को पाने का तरीका है जो इंसान का मन लाता है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि एक पल के लिए ट्रांसेंडेंट की बात भूल जाओ। ट्रांसेंडेंटल बाहर नहीं, बल्कि यहीं फोकस करता है।

तो अगर हम कहें कि क्रिटिकल फिलॉसफी परंपरा की आलोचना करने की एक कोशिश है , जिसमें यह पूछा जाता है कि मन पहले से क्या रिसोर्स लाता है, तो ज़ाहिर है कि ट्रांसेंडेंटल मेथड ही वह मेथड है जो आप चाहते हैं। उन अंदरूनी रिसोर्स तक पहुंचने का मेथड। क्या कुछ ऐसी यूनिवर्सल पहले से बनी धारणाएं हैं जो हर इंसान ज्ञान की खोज में लाता है? देखिए, वह इसी तरह का सवाल पूछ रहा है।

सिवाय इसके कि पहले से तय करना किसी थ्योरी, किसी प्रस्ताव, कांट के सोचने से कहीं ज़्यादा कुछ बताता है, जो एक कॉन्सेप्ट है। क्या कोई यूनिवर्सल कॉन्सेप्ट हैं? अब, यह कहने के बाद, सावधान रहें। क्योंकि वह उस बारे में बात नहीं कर रहे हैं जिसे हमने प्लेटो के बाद से जन्मजात विचारों के रूप में सोचना सीखा है।

अब, एक जन्मजात आइडिया एक पहले से बना हुआ आइडिया है जो पहले से ही आपके दिमाग में है, और आप उसे याद कर सकते हैं। या डेसकार्टेस की भाषा में, एक जन्मजात आइडिया कुछ ऐसा है जो खुद-ब-खुद पता चल जाता है, जो दिमाग में साफ़ और अलग तरह से आता है। यह एक तरह का पहले से बना हुआ आइडिया है जो आपके पास पहले से ही है।

लेकिन कांट जिस तरह के पहले से बने कॉन्सेप्ट की बात कर रहे हैं, वह कोई पूरी तरह से बना हुआ कॉन्सेप्ट नहीं है। यह कोई साफ़ आइडिया नहीं है। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो खुद साफ़ हो।

यह एक ब्लूप्रिंट जैसा है। या आपकी सोच का फ्रेमवर्क जैसा है। यह एक ग्रिड जैसा है जिससे आप जो आएगा उसे छानेंगे।

या एक साँचा जिसमें आप अनुभव डालेंगे। अब, मेरा आम उदाहरण, जैसा कि आप में से कुछ लोगों ने सुना होगा, एक आइस क्यूब ट्रे है जिसमें साफ़-सुथरे डिवाइडर होते हैं। और आप उसमें पानी डालते हैं, और देखिए, थोड़ी देर बाद, वह अच्छे, सुंदर क्यूब्स के रूप में बाहर निकलता है।

आप उन पर काबू पा सकते हैं। पानी को हाथ में पकड़ना थोड़ा मुश्किल है। मुझे लगता है कि जे वुड्स एक क्रेज़ी पुट्टी है।

प्लेटो। हाँ, प्लेटो वाली चीज़ जहाँ आप प्लेटो को किसी चीज़ से निकालकर हर तरह के सुंदर जानवरों में बदल देते हैं। जानवरों के आकार।

खैर, आप इसे एक कुकी सिरिंज की तरह सोच सकते हैं जो क्रिसमस कुकीज़ बनाती है, नोजल से सामान निचोड़ती है और तरह-तरह की स्टार के आकार की कुकीज़ और दूसरी तरह की फैंसी चीज़ें निकालती है। नहीं, यह एक पहले से बना हुआ स्ट्रक्चर है। एक स्ट्रक्चरिंग।

एक फ्रेमवर्क। हाँ। मेटाफर बदलें।

ऐसा लगता है जैसे हमारे पास पहले से मौजूद कोई लेंस है जो चीज़ों को फोकस में लाता है। हाँ, आप सही कह रहे हैं। लेंस।

जब मैं सुबह शेव करता हूँ, तो मैं अपना चश्मा उतार देता हूँ क्योंकि उस पर भाप जम जाती है। लेकिन जब साइडबर्न के ठीक नीचे के बाल करने होते हैं, तो मुझे उन्हें वापस लगाना पड़ता है क्योंकि मुझे दिखाई नहीं देता कि मैं क्या कर रहा हूँ। आप जानते हैं, मैं बाकी का सारा काम महसूस करके कर सकता हूँ।

लेकिन चमगादड़ जितना आधा अंधा होना पूरी तरह अंधा होने जैसा है। चश्मे के बिना, आप जानते हैं, मुझे मज़े करने हैं । खैर, लेंस के बिना आप जान या सोच नहीं सकते।

आप समझ रहे हैं मैं क्या कह रहा हूँ? यह ऐसी चीज़ है जिसे आप देख नहीं सकते। सबके पास एक ही लेंस होता है। सस्ते स्टोर पर जाकर अपना चश्मा ले आओ।

नहीं, आपको इसकी ज़रूरत नहीं है। आप पहले से ही इसके साथ आते हैं, इसे बनाते हैं। आप समझ रहे हैं मैं क्या कह रहा हूँ? तो यह वह पहले से बना हुआ स्ट्रक्चर है जिसे वह ट्रांसेंडेंटल मेथड से सामने लाने की कोशिश कर रहा है।

अलग-अलग तरह की टर्मिनोलॉजी का इस्तेमाल करें। आइए देखें, हम फॉर्मल सच और फैक्टुअल सच के बीच विचारों और फैक्ट्स के रिश्तों के बारे में बात करते समय फर्क करते हैं। फॉर्मल, बस लॉजिकल रूप में।

खैर, कांट के लिए जो प्रायोरी है, वह सिर्फ़ फ़ॉर्मल प्रिंसिपल हैं जो चीज़ों को रैशनल रूप देते हैं। न कि फ़ैक्टुअल कॉन्सेप्ट जो आपको चीज़ों के बारे में बताते हैं। इसलिए प्रायोरी कॉन्सेप्ट अपने आप में आपको कुछ नहीं बताते।

वे किसी बात की पुष्टि नहीं करते। वे सिर्फ़ फ़ॉर्मल सिद्धांत हैं जो आपकी मदद करते हैं, जो अपने आप आपकी सोच को कुछ खास तरीकों से व्यवस्थित और स्ट्रक्चर करते हैं। और कारण और प्रभाव उन सिद्धांतों में से एक होगा ।

जैसा कि मैंने कहा, ग्यारह और भी हैं। ठीक है, कोपरनिकन क्रांति। हाँ, कांट हमें बताते हैं कि यह एक नई कोपरनिकन क्रांति को दिखाता है।

अब आप पहले वाले को जानते हैं। कोपरनिकस। किसने यूनिवर्स के बारे में हमारी सोच को जियोसेंट्रिक से हेलियोसेंट्रिक में बदल दिया?

पृथ्वी सेंटर में है और सूरज सेंटर में है। पहले, हम जहाँ होते थे, वहाँ से हर चीज़ के बिल्कुल बीच में देखते थे। अब, कोपरनिकस की वजह से, हम कहीं किनारे पर आ गए हैं ।

हमें हमारी जगह पर रखा गया है। पूरी तरह से अलग-थलग नहीं। लेकिन हम अपनी जगह को पहचानते हैं और यह भी मानते हैं कि हम चीज़ों के सेंटर में नहीं हैं।

आप समझे? दूसरे शब्दों में, देखने का एंगल, हम कहाँ से आ रहे हैं, नज़रिया, अलग है। अब, फिलॉसफी के हिसाब से, एनलाइटनमेंट में चीज़ों के बारे में सोचने का नज़रिया, नज़रिया, पूरी तरह से ऑब्जेक्टिविटी का था। सभी समझ और ज्ञान की ऑब्जेक्टिविटी।

कभी-कभी इसे, जॉन डेवी इसे कहते हैं, स्पेक्टेटर थ्योरी कहा जाता है। ज्ञान एक स्पेक्टेटर स्पोर्ट है। आप एक ऑब्ज़र्वर हैं, पार्टिसिपेंट नहीं।

आप इसमें कोई योगदान नहीं देते। आप सिर्फ़ पाने वाले हैं। लेकिन कोपरनिकन क्रांति, नई कोपरनिकन क्रांति, सब्जेक्टिविटी लाती है।

सब्जेक्टिविटी इस मायने में कि इंसानी सब्जेक्ट योगदान देता है। यह सब सब्जेक्टिव नहीं है। नहीं, लेकिन इंसानी सब्जेक्ट फॉर्मल स्ट्रक्चर में योगदान देता है।

पहले से बनी सोच। आप समझे? तो इस मायने में, जिस दुनिया को हम जानते हैं, वह वैसी ही दुनिया है जैसा हमने उसे बनाया है। हाँ।

कॉज़-इफ़ेक्ट मैकेनिज़्म की दुनिया, जिसमें ज़रूरी कनेक्शन और फ़ोर्स काम कर रहे हैं, वही दुनिया है जिसकी हमने कल्पना की थी । असल में यह वैसा है या नहीं , यह एक और सवाल है। अब, कोपरनिकन क्रांति, बहुत, बहुत दूर तक फैली हुई है, लेकिन कांट के लिए इसका नतीजा है फेनोमेनन और नौमेना के बीच का उनका फ़र्क।

क्योंकि अगर हम जो जानते हैं, वह दुनिया हमने इस तरह बनाई है, तो यह बस वैसी ही है जैसी हमें दिखती है। मैं जो जानता हूँ, वह मुझे वैसा ही दिखता है जैसा वह है। यह घटना।

यह घटना, जो उनकी जर्मन भाषा में डिंग फर मिच है , मेरे लिए चीज़ है। जबकि नौमेना, चीज़ों की सच्चाई, डिंग एन है। sich , वह चीज़ अपने आप में । और क्योंकि हमारी सब्जेक्टिविटी दुनिया को एक खास तरीके से बनाती है, तो हम जो कुछ भी जानते हैं, अगर हम कुछ भी जानते हैं, तो हम उस ग्रिड के ज़रिए, उस लेंस के ज़रिए जानते हैं।

देखा ? हम सिर्फ़ फेनोमेनस को जानते हैं, नौमेना को नहीं। इसीलिए मेटाफिजिकल नॉलेज के बारे में उनका नतीजा नेगेटिव है। वही प्रीकंडीशन्स जो सोचने को मुमकिन बनाती हैं।

एक सब्जेक्टिव प्रीकंडीशन। अब, ज़ाहिर है, लाइबनिज़ और दूसरों ने जिस बारे में बात की थी, वह पहले से बनी हुई तालमेल थी। और अगर ऐसा होता है कि जो स्ट्रक्चर हमारी सोच को बनाते हैं, वही दुनिया को भी बनाते हैं, तो हमें असलियत का एक कोना मिल जाएगा।

आप समझे? तो कुछ लोगों ने कांट को हैंडल करने का एक तरीका यह अपनाया है कि वे इस बात से सहमत हैं कि पहले से तय कॉन्सेप्ट होते हैं, लेकिन यह भी मानते हैं कि वे असलियत को बनाते हैं। और इसलिए हमारे पास मेटाफिजिकल नॉलेज है, और हम नेचुरल थियोलॉजी वगैरह कर सकते हैं । प्रॉब्लम यह है कि कांट ने इन पहले से तय स्ट्रक्चर को सभी इंसानों के लिए एक जैसा माना, लेकिन 19वीं सदी में आप ज़्यादा दूर नहीं जा सकते, इससे पहले कि वे कल्चरली रिलेटिवाइज़्ड हो जाएं ।

मैक्स वेबर ने यही किया था। समझे ? और दूसरों ने भी। ताकि अगर पहले से मौजूद स्ट्रक्चर कल्चरल चीज़ों के रिलेटिव हो जाएं, तो सारा इंसानी ज्ञान रिलेटिवाइज़ हो जाएगा।

अब, मुझे लगता है कि एक तीसरा ऑप्शन भी है, यानी कि पहले से बने स्ट्रक्चर लॉजिकली ज़रूरी नहीं हैं, लेकिन वे कल्चरली, हिस्टोरिकली डेवलप्ड हैं, इतिहास और इंसानी अनुभव में आज़माए और साबित हुए हैं, इसलिए उन्होंने प्रैक्टिकली खुद को सही ठहराया है। आप समझे? और आपका यह मानना सही है कि चीज़ें वैसी ही हैं जैसी वे देखते हैं। और इससे कोपरनिकन की सारी बातें, वे सारी साइंटिफिक क्रांतियाँ मुमकिन हो जाती हैं जिनके बारे में थॉमस कुह्न जैसे लोग बात करते हैं।

पैराडाइम शिफ्ट, जो पहले से मौजूद ग्रिड में बदलाव है। लेकिन आप देख सकते हैं कि कांट यहाँ कहाँ ले जा रहे हैं। ठीक है, शायद हमें इसे यहीं छोड़ देना चाहिए।

मैं अगली बार इसी पॉइंट पर बात करूँगा। मैं इंट्रोडक्शन के तौर पर एक और बात कहना चाहता हूँ, और यह शुरू करने का एक अच्छा तरीका होगा, यानी, कांट में इसके हिस्टोरिकल इम्पैक्ट के बारे में। हिस्टोरिकल इम्पैक्ट।

और इससे हम आज जो कह रहे थे, उस पर वापस आ जाएँगे, इससे पहले कि हम वहाँ से आगे बढ़ें। ठीक है।